Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

आलमगीर के रोजनामचे में दर्ज शाहू का धर्मान्तरण प्रकरण

डॉ. प्रेमसिंह मोरे*

* सहायक प्राध्यापक (इतिहास) श्री नीलकण्ठेश्वर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खण्डवा (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – 'मुगल साम्राज्य की बुनियाद के लिए मिट्टी का निर्माण बाबर ने किया। हुमायूं के काल में वह मिट्टी गलती रही। अकबर ने उस मिट्टी को चाक पर चढा कर एक व्यवस्थित और सुन्दर रूप प्रदान किया। जहांगीर ने उस साम्राज्य रूपी पात्र को रंग और कलाओं से सुशोभित किया। शाहजहॉ ने उसका उपयोग एशो आराम के लिए किया किंतु औरंगजेब ने अपनी अदूरदर्शिता और अज्ञानता के कारण उस साम्राज्य रूपी पात्र को दक्षिण की चट्टानों से टकरा– टकरा कर चूर – चूर कर दिया।' ये था सम्पूर्ण मुगल साम्राज्य का सेन्ट्रल आइडिया।

औरंगजेब मुगल गार्डन का एक ऐसा कैकट्सी सम्राट था जो ताजीवन साम्राज्य को अपनी कैकटसी वृत्ति से पतन की राह पर ले जाता रहा। उस कैकट्सी सम्राट में कांटों की चुभन के अतिरिक्त कुछ भी न था, न तो उसमें गुलाबों की महक थी और न आनन्ददायी छाया।

मुगल सम्राट औरंगजेब (1658–1707 ई.) एक साम्राज्यवादी शासक था जिसने अपने साम्राज्य के 25 वर्ष दकन में व्यतीत किये थे। दकन के ज्वालामुखी की लपटों से वह निरन्तर झुलसता रहा। वह अपने पिता के शासन काल में दो बार दकन का गवर्नर रहा था। दक्षिण की शिया रियासतों बीजापुर और गोलकुण्डा पर उसने अस्थाई विजय प्राप्त की थी, किंतु दकन की अभेद चट्टानों अर्थात मराठों पर विजय प्राप्त करने में वह वह असफल ही रहा था। शिवाजी और उसके भावी वंशजों से वह निरंतर जूझता रहा।

शिवाजी और औरंगजेब के इस लम्बे संघर्ष का अंत सन् 1665 ई. पुरन्दर सन्धि से हुआ था। यद्यपि इस सन्धि से शिवाजी ने अपने राज्य को नष्ट होने से बचा लिया था। पुरन्दर की यह सन्धि शिवाजी के लिए बडी अपमानजनक थी। वैसे भी शिवाजी के आगरा से पलायन करने के पश्चात् पुरन्दर की यह सन्धि 'ब्रेनडेड' के तुल्य हो गई थी और शिवाजी अपने पुराने ढर्रे पर पुन: सक्रिय हो चले थे।

शिवाजी की मृत्यु के पश्चात् मुगल मराठा संघर्ष का संचालन उग्र संभाजी (1680–1689 ई.) ने अपने हाथों में ले लिया था। औरंगजेब अपने बागी पुत्र शहजादा अकबर का पीछा करता हुआ पुन: दकन आ पहुंचा था। संभाजी की गतिविधियों पर मुगलों की कड़ी चौकसी थी। सन् 1689 ई. संगमनेर के निकट मुगलों से होने वाली एक भयानक मुठभेड में वे परास्त हो गये और शेख निजाम ने उन्हें उनके विशाल परिवार सहित कैद कर लिया था।

संभाजी की नृशंस हत्या – संभाजी की गिरफ्तारी पर औरंगजेब ने खुदा का शुक्रिया अदा किया और खुदा के प्रति अपनी कृतज्ञता जाहिर की। संभाजी ने सम्राट की इस्लामिक शर्तो को ठुकरा कर अपने भावों को खुलकर सम्राट के सम्मुख व्यक्त करते हुये कहा था कि –'उनकी मित्रता का मूल्य सम्राट की एक कन्या होगी।'[1]

उसी दिन रात्री में संभाजी की आंखे निकाल ली गई और कवि कलश की जिव्हा कांट ली गई तदुपरांत दोनो की हत्या सम्राट के ओदश से कर दी गई। संभाजी तथा कवि कलश के अवयव तुलापुर बडु गांव की कटीली झाडियों एवं मल से भरे नाले में फेंक दिये गये थे। जहाँ कुछ दयालु मानवों ने उनके अवयवों को एकत्र कर उनका दाह संस्कार कर दिया था।[2] निर्दयी सम्राट ने संभाजी का साधारण दाह संस्कार भी नही होने दिया था।

मुगल कैद में संभाजी के पारिवारिक राजसी बन्दीजन – संभाजी के परिवार के लगभग 200 सदस्य मुगल कैद में थे।[3] इन समस्त बन्दीजनों में संभाजी की पत्नी महारानी येसुबाई शिर्के, उनका दस वर्षीय पुत्र शाहू ,शाहू की बहन भवानी बाई, येसुबाई के दामाद शंकरराजे महाड़िक, शिवाजी की पत्नी सकवारबाई, चम्पाबाई तथा चम्पाबाई के दासीपुत्र मदनसिंह और माधोसिंह, उध्दवजी योगदेव, मराठा सरदार मोरोपंत सबनीस तथा शाहू की एक विशेष महिला अनुचर ज्योतियाजी केसकर के नाम प्रमुखता से उल्लेखनीय रहे है।[4]

मराठों की राष्ट्रीय आपदा – एक तो संभाजी का दु:खद निधन होना तथा दूसरी ओर संभाजी के परिवार का मुगल शिविर में कैद हो जाना। यह दोनों बाते मराठों के लिए एक राष्ट्रीय आपदा के समान था। मराठों के लिए यह एक भयानक त्रासदी थी जिससे वे उभर नही पा रहे थे।

संभाजी ने अपने पीछे अपनी पत्नी येसुबाई तथा अल्पवय पुत्र को अपने पीछे छोडा था, जिन्हें मराठा सरदार राज्य का सही उत्तराधिकारी मानते थे। सिंहासन के निकट दूसरा व्यक्ति राजाराम था जो सिंहासन की दावेदारी प्रस्तुतु कर सकता था, किंतु राजाराम को राजपद का कोई स्वार्थ नही था। उसने स्वयं यह स्पष्ट कर दिया था कि वह मात्र शाहू का प्रतिनिधि है और सेवक बनकर कार्य करता रहेगा।[5]

छत्रपति राजाराम के महारानी येसुबाई तथा पुत्र शाहु के साथ बडे की अंतरंग और समर्पण के संबंध थे।[6]

मुगल शिविर में शाहू के परिजनों के साथ मुगल सम्राट का सम्मानजनक व्यवहार किया जाना – जो अनापेक्षित था – शाहू के परिजन साधारण बन्दीजन न होकर राजकीय बन्दीजन थे। अत: मुगल सम्राट की दृष्टि में वे राजकीय सम्मान के हकदार थे। प्रारम्भ में उन्हें पृथक–पृथक शिविर में रखा

गया था। तदुपरांत शाहू और येसुबाई को बादशाह बेगम जीनत-उत-निसा के शिविर में ही सम्मान पूर्वक स्थान दिया गया था। जीनत के शिविर में रहते हुये जीनत और येसुबाई के मध्य पारस्परिक मधुर संबंधों की उत्पत्ति हुई। जीनत ने येसुबाई को सगी बहन का प्यार और स्नेह दिया था और जीनत शाहू को अपना पुत्रवत स्नेह प्रदान करती थी।

अ:-सर्वप्रथम मुगल सम्राट ने 10 वर्षीय शाहू को 7000 घुडसवारों का मनसब प्रदान किया। उसे राजा की उपाधि प्रदान की और शाही खिल्लस से नवाजा गया।[7]

ब:- औरंगजेब शाहू को अक्सर उपहार दिया करता था। एक समय उसने शाहू को लाल मणिक जडा हुआ दर्पण हीरे और स्वर्ण से जड़े पक्षी, पाच रत्न जडित अंगूठिया रत्नजटित कमरबंद, रत्न जटित खंजर, सोने के साज सजी हुई एक घोडी तथा दस हजार रूपये उपहार में प्रदान किये थे।[8]

स:- सम्राट ने येसुबाई के दामाद शंकरराजे महाड़िक को 'बन्दा-ए-बादशाह आमगीर' की उपाधि से अलंकृत किया गया। साथ ही उसे रूपये 4000 की खिल्लत प्रदान की गई।[9]

द:-शाहू के छोटे भाई एवं दासी पुत्र मदनसिंह को भी सम्राट ने 'आलमगीर गज खानीजाद बादशाह मदनसिंह' की उपाधि से नवाजा था।[10]

इ:- मुगल सम्राट औरंगजेब येसुबाई को अपनी पुत्रीवत समझता था और रानी का सम्मान करते हुये ही उसने येसुबाई को 'वालिदा-ए-शाहू राजह' की उपाधि से नवाजा था।[11]

शाहू के परिजनों का सम्राट ने वैचारिक कृपणता को त्यागते हुवे उनका तहेदिल से मान सम्मान किया था। उन्हें पदवियों से नवाजा था, तथापि इन राजसी बन्दीजनों पर कडी निगरानी भी रखी जाती थी।[12]

शाहू का धर्मान्तरण प्रकरण - (09 मई 1703 ई. से लेकर 16 मई 1703 ई. की घटना) - सल्तनत काल और मुगलकाल में रियाया के बलात धर्म परिवर्तन तो होते रहे है। किंतु राजा अथवा उच्च पदाधिकारी स्तर के लोगों का बलात धर्म परिवर्तन न तो देखने को मिला था और न ही सुनने को ही मिला था। किंतु जहॉ इतिहास मौन हो जाता है वहां दस्तावेज बोलते है।

राजा शाहू के प्रति मुगल सम्राट का जो भी दयाभाव और मेहरबानिया थी वह समुचित स्वार्थ से प्रेरित थी। वह शाहू का धर्मान्तरण चाहता था। सन् 1703 ई. में अवकाश के क्षणों में जब सम्राट पुणे में अपना जीवन व्यतीत कर रहा था। वह समय रमजान के पाक महीने का समय था।

औरंगजेब ने सबसे पहले 9 मई 1703 ई. को अपने अधिकारी हामिद-उद-दीन खान को शाहू के पास भेजा ताकि वह उसे मुस्लिम बनाने के लिए प्रेरित कर सके।[13] किंतु हामिद खान को अपने उद्देश्य में सफलता नही मिली। शाहू के धर्म परिवर्तन की यह खबर पूरे महाराष्ट्र में जंगल की आग की तरह फैल गई। सम्राट के इस फरमान ने शाहू और येसुबाई को घोर चिन्ता में डाल दिया था। वे अत्यधिक खौफजदा हो गये थे। तब इस गंभीर और असहाय अवस्था में रानी येसुबाई ने अपनी महान संरक्षिका राजकुमारी जीनत से शाहू के बचाव की पुरजोर गुजारिश की थी।

अन्तत: सम्राट मान गया, किंतु एक शर्त के साथ। विकल्प अनुसार शर्त यह थी कि -'शाहू के स्थान पर दो प्रमुख मराठा सरदार स्वयं का इस्लाम में परिवर्तित होने के लि अपने आपको प्रस्तुत करें।'

एक बन्दी के रूप में मुगल शिविर में रहते हुये शाहू को 18 वर्ष हो चुके थे। उन्हीं दिनो कट्टर इस्लामिक काल में भी जब नि:स्वार्थ देशभक्ति एक दुर्लभ मानवीय गुण था तब भी देश में ऐसे लोग विद्यमान थे जो अपने देश और राजा के लिए निस्वार्थ बलिदान की भावन रखते थे और देश के हित में बिना किसी सोच विचार के तथा बिना किसी आह के अपना जीवन बलिदान कर सकते थें।

गूजर बन्धुओं का बलिदान - शिवाजी के घुड़सवार सेनापति तथा छत्रपति राजाराम के ससुर महाप्रतापी प्रतावराव गूजर के दो प्रमुख पुत्रों खण्डेराव और जगजीवन जो शाहू के साथ ही बन्दी जीवन काट रहे थे, ने 16 मई 1703 ई. को शाहू के बदले अपने धर्म परिवर्तन का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया था। इस प्रकार दोनो बलिदानी रणबांकुरे के प्रति शाहू- ताउम्र कृतज्ञ बना रहा।[14]

धर्म परिवर्तन के साथ ही दोनो बलिदानी गूजर बन्धुओं का नाम भी बदल कर अब्दुल रहीम और अब्दुल रहमान रखा गया।[15]

सम्राट औरंगजेब स्वयं इन गूजर बन्धुओं के बलिदान के सम्मुख कृतकृत्य हो गया था। उनके इस बलिदान को देखकर सम्राट ने उन्हें सतारा के निकट, सालगांव की जागीरी देकर उनका सम्मान किया, उन्हें उपकृत किया जहां गूजर बन्धुओं के भावी वंशज सतारा के परली ग्राम में आज भी निवासरत है।[16]

सन्दर्भ ग्रंथ सूची:-

1. जी.एस. सरदेसाई :- मराठों का नवीन इतिहास, 1959, जि-1,पृ. 397
2. शिव चरित्र प्रदीप, पृ. 34 - व्ही.व्ही. आप्टे तथा एस. दिवाकर द्वारा प्रकाशित, इतिहास संशोधक मण्डल पूना तथा भारत संशोधक मण्डल- क्वाटरली पत्र-11-पृ.15
3. डॉ.सुशीला वैद्य :- मराठा राजनीति में महिलाओं की भूमिका (1620-1752 ई.) 2000, पृ. 116 - शारदा पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
4. डबल्यू. डबल्यू. इर्विन :- लेटर मुगल, जि.!! पृ.160-प्रकाशक एम.सी. सरकार तथा सन्स, कलकत्ता, 1922- तथा इतिहास संग्रह, ऐतिहासिक चरित्र, पृ.7
5. डॉ. ए.आर. कुलकर्णी :- दी मराठाज, 1996-पृ.64, बुक्स एण्ड बुक्स प्रकाश नई दिल्ली।
6. डॉ. बृजकिशोर :- ताराबाई एण्ड हर टाइम्स, 1962-1963-पृ.104 - प्रकाशन-एशिया पब्लिशिंग हाउस- बाम्बे केलकटा।
7. डबल्यू. डबल्यू. इर्विन :- लेटर मुगल, जि.2-पृ.160
8. खरे - कुलकर्णी :- मराठायांचा इतिहास, खण्ड - 1.पृ. 442 तथा डॉ. स्वर्णा निंबालकर :- महारानी येसुबाई , 2021 पृ. 189 संस्कृति प्रकाशन पुणे।
9. सनद फडनिसी शाहू दफ्तर, रूमाल नं. 2 पदका, -! क्रमांक -1
10. इतिहास संग्रह :- ऐतिहासिक चरित्र, पृ.8
11. सरदेसाई :- मराठी सियासत, भाग - 2-पृ.28
12. सेतु माधव पगडी :- मराठयांचे स्वातन्त्र युद्ध पृ. 65-70
13. असबारात तथा ऐतिहासिक संकिरना साहित्य संख्या - 4-पृ. 41
14. सर देसाई :- मराठी रियासत, भाग-2, पृ. 286
15. डॉ. बृजकिशोर :- ताराबाई एण्ड हर टाइम्स,1962-1963,पृ.95, प्रकाशक - एशिया पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली - कलकत्ता
16. डॉ. स्वर्णा निबांलकर, -: महारानी येसुबाई, पृ. 201